रविवार, दिनाँक 04-08-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

जीवन दा मैंनू आनन्द आ गया है,

जदों दा मैं एह शहनशाह पा लिया है......

सजनों जिस किसी के मन में भी यह शुभ भाव स्थित हो जाता है, उसकी सुरत अपना जीवन उद्धार कर, परमधाम पहुँच विश्राम को पाती है। अतः सजनों मानो कि साजन जो 'आत्मा में परमात्मा है', उसके अतिरिक्त सुरत का कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए परमात्मा के संग निरन्तर, बने रहने में ही सुरत की शान है। सजनों अपनी इस वास्तविक शान में जो भी स्थित रहना चाहता है उसको इस सत्य को स्वीकार कर हर क्षण 'ओ३म् आद् अक्षर' का जाप करते हुए, अपने ख़्याल को अजपा में विलीन करना होगा। याद रखो जैसे ही ऐसा हुआ यानि ख़्याल अजपा में विलीन हुआ वैसे ही शब्द में स्थित हो जाएगा। शब्द में स्थित होते ही सुरत पति परमेश्वर साजन का साक्षात्कार कर अमरता को प्राप्त हो जाएगी। सजनों इस बात का आपने ध्यान रखना है और मानना है कि यह कोई कठिन कार्य नहीं है क्योंकि इसका विधि-विधान, जब आपको नाम-युक्ति मिली उस समय अच्छे से परिपूर्णतया समझाया गया था। आपको तो बताए गए विधान अनुसार केवल क्रिया करनी है। इस संदर्भ में हम मानते हैं कि आपके पास अपनी इच्छापूर्ति हेतु ज्ञान तो है परन्तु क्रिया के प्रति जो कमजोरी है, उस कारण आप अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पा रहे। सजनों यह निर्बलता दिन-प्रति-दिन बढ़ती ही जा रही है अतः स्वयं पर नियन्त्रण रखना अति आवश्यक है। आशय यह है कि इस कमजोरी को दूर करने के लिये आत्म-नियन्त्रण द्वारा 'ओ३म् आद् अक्षर' का जाप विधि-पूर्वक सुनिश्चित करना आवश्यक है। अतैव अब आप जब भी जाप करो तो अन्तर्घट में वैसा ही अनुभव भी करो। इस तरह हर श्वास के साथ जैसे ही घड़ी की टक-टक की तरह जाप करोगे और संकल्प रहित अवस्था में स्थित रहोगे तो आपको अनुभव होगा कि आपका ख़्याल यानि सुरत ऊपर ही ऊपर उठ रही है। फिर इस प्रयास में निरन्तरता साधते हुए सुरत जितनी ऊपर उठती जायेगी उतनी ही सफलता को प्राप्त होती जाएगी। ऐसा इसलिए क्योंकि जैसे ही मनुराज के बोझ तले दबा हुआ ख़्याल ऊपर उठता है तो वह हल्का-फुल्का हो जाता है। तदुपरान्त उसे ऊपर उठने के लिए अधिक परिश्रम

नहीं करना पड़ता अपितु केवल जाप के समय ध्यान की स्थिरता की आवश्यकता होती है। ध्यान की स्थिरता की अवस्था में दृष्टि को 'आत्मा में परमात्मा' का एहसास होना आरम्भ हो जाता है। सजनों जैसे ही यह एहसास होना आरम्भ होता है वैसे ही अक्षर चलाकर, निरंतरता साधने के प्रति हमारी हिम्मत भी बढ़ती जाती है और हम सफलता के अधिकारी बनते जाते हैं। इस सफलता को प्राप्त करने हेतु सजनों यत्न करो। हो सकता है कि इस यत्न से सुरत-शब्द समरस अपनी यथार्थ अवस्था में जगत में स्थित रहते हुए निष्काम-भाव से विचरने के काबिल बन जाये और सफलता को प्राप्त हो जाएं।

सजनों हम फिर कह रहे हैं कि यह कोई कठिन कार्य नहीं है अपितु हमने तो आसान काम को कठिन बना लिया है। आप ही बताओ कि इच्छाओं का इतना अधिक बोझ लिये हमारा अतृप्त मन एकाग्र कैसे हो सकता है? यही बोझ अफलता का कारण बन रहा है। इस तथ्य के दृष्टिगत हमारे लिए बनता है कि हम व्यक्तिगत रूप से समझदार बनकर, जो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से नाम-युक्ति मिली हुई है, उसका विधिवत् पालन करें। साथ ही जीवन की हर परिस्थिति को समकर जाने। सजनों जानो कि एक दफा ठान लिया तो इस कार्य की सिद्धि नामुमकिन नहीं रहेगी। इस बात को समझते हुए अपने पर आप कृपा करो। याद रखो इस कार्य की सिद्धि के निमित्त पुरुषार्थ तो आपको खुद ही करना होगा और शास्त्र विहित आज्ञाओं का पालनकर सुपुत्र बनना होगा। अतः ऐसा करने की आदत डालो। अब ध्यानपूर्वक भजन सुनोः-

भैणां पंजा विषयां नूं छोड़ के, आओ महाबीर जी दे द्वार।

रघुनाथ जी दे चरण दिखा देसन, सारी उमर खुशी विच गुज़ार।।

भैणां वैर विरोध हटाके, महाबीर जी दा नाम ध्याओ।

शान्ति हृदय विच वसे, सियाराम जी दे दर्शन पाओ।।

आशा तृष्णा नूं छोड़ के, प्रीति महाबीर जी दे चरणां नाल लाओ।

ओ दीन पर दयाल होसन, मौत दा भय मिटाओ।।

सेवकां दी प्रीति देख के, महाबीर जी होय प्रसन्न।

ओ दीन पर दयाल हुए, असली बख्शाया ने धन।।

भैणां हर स्वास नाम ध्याय के, जन्म लवो सुधार।

मोह माया दी फाँसी कटन, हनुमान बलधार।।

भैणां आशा तृष्णा दी काली सर्पणी, बैठी ए कुंडल मार।

जे इस काली तों बचना चाहवो, भज लवो राम बलधार।

मौत आवाज़ां मारदी, करदी ए आजा आ।

नाम ध्याओ महाबीर जी दा, मौत तों लेसन बचा।।

जित्थे महाबीर जी दा नाम है, उत्थे मौत नहीं सकदी डरा।

रघुनाथ जी दे चरण दिख देसन, मौत नूं देसन हटा।।

रावण ने मौत नूं छोड़िया, महाबीर जी नूं रही डराये।

महाबीर जी झपट्टा मारया, मौत नूं लिया फंसाये।।

तेतीस करोड़ देवते आंवदे, महाबीर जी अग्गुं करन नमस्कार।

नीति ए संसार दी, मौत नूं छोड़ दियो बलधार।।

रघुनाथ जी दे नाम दी ताकत है, बली मौत नूं दित्ता ए डराये।

नाम ध्याओ महाबीर जी दा, शास्त्र रिहा बताये।।

आशा तजो तृष्णा तजो, भैणां दिल तों तजो अभिमान।

इको रूप पछान लवो, बली पूरण कर देसन काम।।

मिथ्या सब संसार है, मिथ्या सब जहान।

महाबीर जी ए फ़रमा रहे, इको रूप पछान।।

असत्य नूं भैणां छोड़ के, सत्य नूं लवो धार।

महाबीर जी दी शरणी आवो, बेड़ा कर देसन पार।।

कूड़ तजो कपट तजो, भैणां दिल तों तजो अभिमान।

नाम ध्याओ महाबीर जी दा, खुश होवन राजा राम।।

बली बड़े बलवान हैं, रघुनाथ जी दे नाल प्यार।

जो इच्छया फल पावसी, बली सब कुछ देवन हार।।

जन्म जन्म दियां बिछड़ियां, दासियाँ रहियाँ घबराये।

मेहर कीती महाबीर जी, रघुनाथ जी नूं दित्ता ए मिलाये।।

सब कुछ महाराज जी नूं सौंप के, भैणां हो जावो आनन्द।

शरणी आओ महाबीर जी दी, पूरण परमानन्द।।

किस नाल लावां भैणां दोस्ती, किस नाल करां प्यार।

सांवले चरणां नूं भुल के, असां कष्ट उठाये हज़ार।।

गाफ़ल सुत्तियां भैणां, इस घर विच आईयां मेहमान।

सच्चे घर दी भाल करो, भैणां न होवो नादान।।

इक नूं भैणां भुलियां, कर्मा कष्ट दिखाये हज़ार।

इको रूप पछान लवो, फिर कर्म न सकन कुछ बिगाड़।।

छोटी उमर कर्म करने लगे, जन्म बैठे बिगाड़।

महाबीर जी दे चरणां उत्ते डिग पवो, कर्म कटन बलधार।।

सन्त ओही महात्मा ओही, शिव ब्रह्मा ओही जान।

असां भुलियां होईयाँ दासियाँ नूं, महाबीर जी मिलासन राजा राम।।

जौ भैणां कर्म कटने चाहो, जपो महाबीर जी दा नाम।

नाम बड़ा बलवान है, पूर्ण होसन काम।।

दासी हुण ऐही आख रही, महाबीर जी दा नाम ध्याओ।

ऋद्धि सिद्धि नव निधि बख्शन, मौत दा भय मिटाओ।।

इस भजन को सुनकर सजनों अक्ल टिकाणे आ जानी चाहिये क्योंकि इस भजन मेंमें अमरता का प्रतीक बनने की महान युक्ति का वर्णन किया गया है। यही नहीं सजनों आज तक जितनी ही विकार-वृत्तियाँ आप धार चुके हो, उस हर विकृति का वर्णन इस भजन में आया है और उसका उपचार किस विध् करना है वह विज्ञान यानि युक्ति भी इस भजन द्वारा कलुकालवासियों को प्रदान की गई है। इस तरह इस भजन का एक-एक शब्द अविचार से विचार में आने के लिये तो प्रेरित कर ही रहा है साथ ही यह भी जना रहा है कि ऐसा स्वाभाविक परिवर्तन लाने के पश्चात आपको क्या-क्या सुखदायक व जीवनदायक लाभ प्राप्त होने वाला है। इस संदर्भ में सजनों अगर हम आत्म-नियन्त्रण रखते हुए सच्चेपातशाह जी की इस वाणी को इज़्जत देते हैं तो निश्चित ही तीनों लोकों में हमारी इज़्जत हो सकती है। निश्चित रूप से हमारा कुटिल कामी मन शान्त अवस्था को प्राप्त हो हमारा सजन बन सकता है और हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार प्रदत्त नाम-ध्यान के जाप द्वारा अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। आप ऐसा करने में कामयाब हो इसलिए तो सजनों आपको अपने अन्तर्घट में आध्यात्मिक क्रान्ति छेड़ने का आवाहन दिया गया है और इसके तहत् आपको शास्त्र-विहित भाव-स्वभाव अनुसार निष्पाप जीवन जीने के योग्य बनने के लिये कहा गया है। सो सजनों जो जन्म व्यतीत हो गये सो हो गए उसे भूल जाओ यानि अपनी लापरवाहीवश और अज्ञानमय अवस्था के कारण जो दुःख हमें विभिन्न योनियों में भोगने पड़े, उसे विस्मृत कर दो और इस जन्म में ज्ञानमय अवस्था में आ जाओ क्योंकि आपके पास सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ है, जिसका एक-एक शब्द सत्य का प्रतीक है। सत्य को धारणा ही हमारे जीवन की प्राथमिकता होनी चाहिये क्योंकि परमेश्वर और कुछ नहीं, 'सत्य' ही है और 'सत्य' ही परमेश्वर' है। इस विषय में ज्ञात हो कि जैसे ही हृदय सत्य से परिपूर्ण हो सचखण्ड बन जाता है, वैसे ही आत्म साक्षात्कार हो जाता है और जीव अमरता को प्राप्त हो जाता है। अमरता को प्राप्त होना एकरूपता का लक्षण है। सजनों जब एकरूप की पहचान हो जाती है तो परस्पर व्यवहार में केवल एकमात्र सजन-भाव चलता है। जानो जहाँ परस्पर सजनभाव चलता है वहाँ नज़रों में समभाव हो जाता है और इन्सान को समदृष्टि का सबक़ मिल जाता है। तदुपरान्त दिव्य दृष्टि हो जाती है यानि जो मन मन्दिर प्रकाश वही जग अन्दर निगाह आता है और सजन त्रिकालदर्शी बन अपने परमात्म स्वरूप यानि यथार्थ को पहचान जाता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों आप भी इस भजन में जो छोड़ने हेतु कहा गया है उसे तत्क्षण त्याग दो और इसमें वर्णित जो प्राप्त करने योग्य सत्य है उसे अविलम्ब धारण करो क्योंकि वह प्राप्ति सबसे उत्तम, सबसे सुन्दर व आलौकिक है। इस संसार में उसके समतुल्य और कुछ भी नहीं है। इसी द्वारा आप अमीरों के भी अमीर, शहनशाहों के भी शहनशाह बन सकते हो। अभी तो आप छोटे-छोटे पदों को प्राप्त करने के लिये भाग रहे हो, उसके प्रति प्रतिस्पर्धा में लगे हुए हो परन्तु अब उसे छोड़ त्रिलोकी की कुर्सी प्राप्त करने का उत्साह मन में पैदा करो और इस हेतु इस भजन को बार-बार पढ़ो। फिर कह रहे हैं कि आध्यात्मिक क्रान्ति के तहत् अपना आचार-व्यवहार, भाव-स्वभाव तबदील कर लो ताकि आपका स्वाभाविक ताना बाना निर्मल हो जाये और कोई भी दोषारोपण कर आप पर ऊँगली न उठा सके।इस तरह आप परम आनन्द अवस्था को प्राप्त हो जाओ। आगे अब कीर्तन सुनोः-

(महाबीर जी के मुख के शब्द, श्री साजन जी को कह रहे हैं)

रघुवर जी नाल करलौ प्यार प्यार, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।

कुछ बात चीत ओन्हां करनी ऐं, कलुकाल दी पीड़ा हरनी ऐं।।

अंग संग राहवन ओ नाल ओ नाल, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

ओ बात ऐसी सुनावनगे, जगत विच रोशनी लियावनगे।

हनेरा ओ देसन मिटा मिटा, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

रोशनी ओही प्रकाश वी ओही, हर वस्तु विच निवास वी ओही।

ओ होसन दीनदयाल दयाल, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

धर्म दा झण्डा झुलांवनगे, सुकर्मां दा राज लियावनगे।

ठण्डी आवे हवा हवा, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

रघुनाथ जी लीला ऐसी वर्तावनगे, विसूचिका दी सूचका दिखावनगे।

कलयुग दा बखेड़ा देसन मिटा मिटा, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

सजनों उपरोक्त वर्णित भजन के अनुसार आध्यात्मिक क्रान्ति छेड़कर आपने निश्चित रूप से विजयी होना है। इस संदर्भ में आपने अभी परमात्मा का निमन्त्रण सुना - जो भी उस आध्यात्मिक क्रान्ति में सफल होगा, उन सजनों को पहले ही बुलावा मिल गया है। तो हर एक के मन में प्रभु के निमन्त्रण अनुसार दरबार में पहुँचने की प्रबल इच्छा होनी चाहिये। अतः निर्भयता से आत्म-सुधार हेतु अनथक परिश्रम कर अविलम्ब यत्न करना आरम्भ करना होगा। याद रहे जीवन में किसी प्रकार की भी परिस्थिति आये पर बदलाव की यह क्रिया रुकनी नहीं चाहिये, तभी आप प्रभु के दरबार में शोभायमान होने के योग्य बन सकोगे। इसलिए अब आपकी वाणी, आपकी वृत्ति, आपकी स्मृति व बुद्धि निर्मल हो जानी चाहिये। इस हेतु उपरोक्त भजन में जितने भी दुर्भावों का वर्णन हुआ है उन सबको अपने अन्दर से समेट कर, उनकी जगह सद्भावों का ग्रहण करना आरम्भ कर देना चाहिये। सजनों यह होगा - नश्वरता से अमरता की ओर बढ़ना। हमारी तो यही कामना है कि इस क्रान्ति में सभी सफल हों परन्तु परिणाम तो अपनी-अपनी व्यक्तिगत मेहनत पर निर्भर करता है। इस संदर्भ में यदि आपको अपने जीवन से तनिक सा भी प्यार है तो हारना मत अन्यथा बहुत-बहुत बुरी तरह से पछताना पड़ेगा, युगों-युगों तक नामो-निशान भी कहीं नज़र नहीं आयेगा। अपने साथ ऐसा गुनाह कदापि मत करना अपितु मानसिक रूप से आत्म-नियन्त्रण रखते हुए खुद में बदलाव ले आना और उसी अनुरूप स्वयं को साध लेना। ऐसा करने से आपकी जिव्हा चुप कर जायेगी और ख़्याल भी सोचों में नहीं रहेगा अपितु सदा अफुर अवस्था में बना रहेगा। सजनों जब जिव्हा चुप और ख़्याल जगत की सोचों से स्वतन्त्र हो गया तो मान लेना कि अब आत्म-साक्षात्कार होना ही होना है। अतः एकरूप पहचानना ही पहचानना है। उस एकरूप को पहचानते ही कह उठोगेः-

इको रूप तुम्हारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा

प्रकाश रिहा जग सारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा

चलो आगे सुनोः-

श्री रघुनाथ जी अपने सुपुत्र श्री महाबीर जी को कह रहे हैं

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।

कोई विरला ओ बच जासी, जेहड़ा राम शरण जो आसी।।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

महाबीर जी अपना बल प्रगट करो, भारत माता जी दे सिर तों भार हरो।

माता जी दे कष्ट निवारण करो, नाम तुहाडा तेजधारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

राम नाम नूं हुन याद करो, जन्म अपने नूं आबाद करो।

सतवस्तु दा सजनों राज करो, ओ सबदा शहनशाली है।।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

अत्यन्त नाम वल ध्यान धरो, जन्म अपना हुन आज़ाद करो।

सतवस्तु दा सजनों साज करो, ओहदी ताकत अजब निराली है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

भारत माता जी दी आज्ञा दा पालन करो, संकट टारी माता दा संकट दूर करो।

माता मारे आवाज़ां, ऊंदी विपता हरो, नाम आपदा हनुमान जी बलधारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

भारत माता जी दे वचनां नूं पूरा करो, हो सपुत्र उस दी पीड़ा नूं दूर करो।

हटे अन्धेरा हुन चानणा ज़रूर करो, नाम आपदा न्यायकारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

सजनों कुदरत का इतना भयावह सन्देश सुनने के पश्चात तो खुद को खुद सम्भालना बनता है। अब सम्भालना कैसे है? - वह युक्ति सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत भजन द्वारा आपको बता दी गई है। अतः आप सब हिम्मत दिखाकर पलटा खा जाना और ऐसा बनने के योग्य बनने हेतु जो आपको कार्य दिया हुआ है - समभाव-समदृष्टि के सबक़ों के दो कीर्तनों को समझदारी से पढ़ना, उसे नियम से सममझदारी से पढ़ते रहना। इस विषय में अब आप अपना सच आप ही जानो कि वह क्रिया आप नित्य-प्रति कर रहे हो अथवा करवा रहे हो या नहीं। अगर नहीं तो समझ लो कि अपने सबसे बड़े वैरी आप खुद ही हो। इस संदर्भ में अभी भी मौका है यानि कुछ दिन शेष पड़े हैं, थोड़ी और मेहनत करके अपने होम-वर्क को पूरा कर लो। इस तरह समभाव समदृष्टि के सबक़ के प्रति हर विध् भली-भान्ति परिचित हो जाओ क्योंकि समभाव-समदृष्टि होने पर ही जीत है। इसके लिये आपको पुनः मौका मिल रहा है। थोड़ी ज्यादा मेहनत कर लो ताकि पन्द्रह अगस्त को जो भी बातचीत चले, आपके अन्दर एहसास हो कि आप उस बातचीत से परिचित हो। ऐसा होने पर वह बात, वह ज्ञान, वह युक्ति आपके अन्दर ठहर जायेगी। अगर एक दफा समभाव-समदृष्टि की युक्ति आपके अन्दर ठहर गई तो युक्ति का इस्तेमाल कर आपको एक-निगाह, एक-दृष्टि होने में कोई कठिनाई नहीं आयेगी क्योंकि एक-दर्शन मे स्थित होने का यह आसान तरीका है।

इस संदर्भ में सजनों पन्द्रह अगस्त जोकि सार्वजनिक अवकाश का दिन है, उस दिन अपने संगी-साथियों सहित अवश्य दस बजे से पहले वसुन्धरा पहुँच जाना ताकि पूरी बात आरम्भ से ही अपको समझ आ जाये। अगर मध्य में आये तो आधा-अधूरा ज्ञान प्राप्त होगा। फिर

सोलह तारीख को यहाँ संगीत की प्रतियोगिता का समापन समारोह है, जिसमें अलग-अलग शहरों के जो विजेता हैं, वह टीमें यहाँ आकर अपना प्रदर्शन प्रस्तुत करेंगी। आप इस कार्यक्र में भी अपने बच्चों को अपने साथ लेकर अवश्य आना ताकि वह भी अगले साल से इस कार्यक्रम में भाग लेने को उत्सुक बनें। अपने बच्चों की सजनों हिम्मत बढ़ाओ। ताकि बच्चों का कलात्मक कार्यक्रम देख उनके अन्दर भी रूचि पैदा हो। सजनों फिर से कह रहे हैं कि पन्द्रह अगस्त को आपने समभाव-समदृष्टि में निपुण होने के लिये यहाँ पर बिल्कुल अफुर अवस्था में बैठना है ताकि उसके पश्चात आपको समभाव-समदृष्टि से परिचित न करवाना पड़े क्योंकि उस दिन मुकम्मल बात होने वाली है। ऐसे सुनहरी अवसर जीवन में बार-बार नहीं आते तो इधर-उधर बेकार समय व्यतीत करने के स्थान पर अपने जीवन को उन्नतिशील बनाने में लगाओ। अगर आप अपनी उन्नति के प्रति सतर्क नहीं हो या कमजोर हो तो मान लो कि इस जीवन में आप मानव चोले का मोल ही नहीं जान पाये। अगर जान लेते कि यह मानव चोला अनमोल है तो आपकी रैहणी-बैहणी अध्यात्म अनुसार होती। अब आध्यात्मिक क्रान्ति छिड़ चुकी है अतः आपकी रैहणी-बैहणी भी अध्यात्म अनुसार ही होनी चाहिये। इस हेतु मान लो कि इसके बगैर आपके पास सुख आनन्द का कोई भी मार्ग नहीं है, सब द्वार बन्द है। बस, एक ही रास्ता है - सजन श्री शहनशाह महाबीर जी का द्वारा और उनके वचनों की अमृत-वर्षा, जो जन्म-जमान्तरों की मैल धोकर आपको पावनता का प्रतीक बनाने वाली है, अतः इस बात को स्मृति में रखना और कार्यक्रम में सपरिवार आकर अपना व अपनों का उपकार करना।

इन्हीं शुभकामनाओं सहित, जय सीताराम जी।